

कुरआन-ए-हकीम के 10 बुनियादी अहकाम

अल्लाह की तमाम इल्हामी किताबों का खुलासा यही 10 बुनियादी अहकाम (commandments) है

(सुरह बनी इस्राईल आयात 23 से 39)

[سُورَةُ بَنِي إِسْرَآئِيلَ : 23 تا 39]

﴿ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ﴾ इसी का अहद का इआदह हम अपनी हर नमाज़ में भी करते हैं: وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ.. ①

① और तुम्हारे रब ﷻ ने हुकम दिया था कि उसके सिवा किसी की इबादत मत करना। ﴿अल्लाह ﷻ के लिए नमाज़ और सिर्फ उस ही से दुआ﴾

②وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أَفٍ وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝ وَاحْفَظْ لَهُمَا جَنَاحَ الذَّلِيلِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا ۝ رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي نُفُوسِكُمْ ۚ إِن تَكُونُوا صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلْأَوَّابِينَ غَفُورًا ۝

② और माँ बाप के साथ अच्छा सलूक करना और अगर तेरी ज़िन्दगी में, उन में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाए तो उन को उफ़ तक मत कहना और उन्हें मत झिड़कना और उन से बात बड़ी ताजीम से करना और उनके लिए अपने कंधे मुहब्बत और इन्किसरी से झुका देना और अर्ज़ करना " ऐ मेरे रब ﷻ इन दोनों पे रहम फरमा जिस तरह इन्होने मुझे बचपन में पाला था । तुम्हारा रब बेहतर जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है. अगर तुम नेक किरदार होंगे (अपने वालिदैन् के हक में) तो बेशक वो तौबा करने वालो को माफ़ फरमाने वाला है

③ وَأَتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَسِيرَ وَالْمَسْكِينَ وَابْنِ السَّبِيلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيرًا ۝ إِنَّ الْمُبَذِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ ۖ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ۝ وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَّيْسُورًا ۝ وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

③ और देना रिश्तेदार को उसका हक और मिसकीन और मुसाफिर को भी, और फिज़ूलखर्ची मत करना और फिज़ूलखर्ची करने वाले शैतानो के भाई है, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है, और अगर (तंगदस्ती की वजह से) तुझे उन से मुह फेरना पड़े और तुम खुद अपने रब ﷻ की रहमत (खुशहाली) के मुतलाशी हो जिसकी तुम्हे उम्मीद है (तो कम अज़ कम) उन से बात ही नरमी से करना, और न बनाना अपने हाथ को अपनी गर्दन से बंधा हुआ (कंजूसी से) और न ही उसको बिलकुल खोल देना (फराखदिली से) की आखिरकार बैठ जाओ मलामत ज़दा हुए दरमान्दा, बेशक तुम्हारा रब ﷻ कुशादा कर देता है रोज़ी जिसके लिए चाहता है और तंग कर देता है (जिसके लिए चाहता है) बेशक वो अपने बन्दों से आगाह है उन्हें देखने वाला है .

④ وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ مِّنْ نَّحْنُ نَرُفُّهُمْ وَإِيَّاكُمْ أَن تَقْتُلَهُمْ كَانَ خَطَاً كَبِيرًا ۝

④ और अपनी औलाद को मुफलिसी (गरीबी) के डर से कत्ल मत करना, हम ही रिज़क देते हैं उन्हें भी और तुम्हे भी । बेशक उनको कत्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है.

5 وَلَا تَقْرَبُوا الرِّثَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

5 और ज़िना और बदकारी के करीब भी मत जाना (खवा वो किसी भी शकल में हो) और बेशक ये बड़ी बेहयाई है और बहुत ही बुरी राह है ।

6 وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطٰنًا فَلَا يَسْرِفُ فِي الْقَتْلِ ۚ إِنَّهُ كَانَ مَنصُورًا ۝

6 और मत कत्ल करना उस जान को जिसे कत्ल करना अल्लाह ﷻ ने हराम कर दिया है मगर हक के साथ (यानी किसास वगैरह की सूरत में) और जिसे नाहक कत्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को हक दिया है (किसास का), पस कत्ल में इसराफ नहीं किया जाए और ज़रूर उसकी (वारिस की) मदद की जाएगी ।

7 وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝

7 और मत करीब जाना (खसूसन) यतीम के माल के मगर उस तरीका से जो बेहतर हो (यतीम के हक में) यहाँ तक की वो अपनी जवानी को पहुँच जाए और पूरा करना अपने अहद को (खसूसन यतीम के माल की हिफाज़त के मुतालिक) बेशक अहद के बारे में तुम से पूछ होगी ।

8 وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

8 और पूरा पूरा मापना जो तुम मापने लगे, और जब तौलना तो सीधे तराजू के साथ, और यही तुम्हारे लिए बेहतर और अंजाम के लिहाज़ से अच्छा है ।

9 وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۚ إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَٰئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولًا ۝

9 और मत पैरवी करना उस चीज़ की जिसका तुमको इल्म नहीं है, बेशक कान, आँख और अकल इन सब के (इस्तेमाल के) मुतालिक तुम से पूछ होगी ।

10 وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۚ إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۝

10 और मत चलना ज़मीन में अकड़ते हुए, (इस तरह) न तो तुम चीर सकते हो ज़मीन को और न ही पहुँच सकते हो पहाड़ों के बराबर बुलन्दी में

आखरी नसीहत

وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلٰهًا آخَرَ فَتُلْقَىٰ فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَّدْحُورًا ۝

सब (बयां करदा कामो) की ये बुराई तेरे रब को (सख्त) नपसंद है, ये है (वो हिदायत) जो बज़रिया ए वही आपका रब आपकी तरफ हिकमत की बातों में से भेजता है, (ऐ हर सुनने वाले इन्सान याद रख) अल्लाह ﷻ के साथ किसी को माबूद (पूज्य) मत बनाना, वरना (याद रख, शिर्क करने की सज़ा में) तुझे जहन्नम में फेंक दिया जाएगा, मलामतज़दा हालत में धक्के देते हुए ।

کुरآن و سوننت ریسرچ اکیڈمی®

[آل عمران : 85]

① وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ

ترجمہ آیات-ع-مبارک : اور جو کوئی (دنیا کی زندگی میں) اسلام کے علاوہ کسی اور دین کو اختیار کرے گا تو اسے شمس سے (اسکا دین) ہرگز قبول نہیں کیا جائے گا اور وہ آخرت میں خسارہ پانے والوں میں سے ہو جائے گا۔ (آل عمران: 85)

② إِنَّ الدِّينَ قَرْفُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شَيْعًا لَسْتُ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يَنْتِظُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ [الانعام : 159]

ترجمہ آیات-ع-مبارک : بے شک جنہوں نے اپنے دین میں فیکر بناے اور گروہوں میں بٹ گئے آپ (رسول ﷺ) کا ان سے کوئی تعلق نہیں ہے، انکا معاملہ اللہ کے سپرد ہے، پھر وہ (اللہ کے حکام کے دین) ان (فیکر بازوں) کو ان کے کرتوت بتا دے گا۔ (آل انعام: 159)

[آل عمران : 103]

③ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا

ترجمہ آیات-ع-مبارک : اور تم سب ملکر اللہ کی رسی (کुरآن) کو مजبوتی سے تھام لو۔ اور آپس میں فیکر میں مت تقسیم ہو جاؤ۔ (آل عمران: 103)

④ **ترجمہ سہیہ ہدیہ :** اے لوگوں آگاہ ہو جاؤ! میں بھی انسان ہوں، قریب ہے کہ میرے پاس میرے رب کا کاسید (موت کا فرشتہ) آئے اور میں اسکی بات قبول کر لوں۔ میں اپنے بعد تم میں دو اچھی چیزیں چھوڑ کر جا رہا ہوں: ① پہلی چیز تو اللہ کی کتاب (کुरآن) ہے، اس میں ہدایت اور نور ہے، تم اللہ کی کتاب کو پکڑو اور اس سے تعلق مजبوت کرو۔ اللہ کی کتاب اللہ کی رسی ہے، جس نے اسکی کتاب کی وہ ہدایت پر ہے اور جس نے اسے چھوڑ دیا وہ گمراہ ہو گیا۔ ② دوسری چیز میرے اہلے بیت ہیں۔ میں اپنے اہلے بیت کے متعلق تمہیں اللہ سے ڈراتا ہوں۔ (ان سے اچھا برتاو کرنا) (سہیہ مسلمان "کتاب الفضائل" حدیث نمبر 6228) [6228]

نوٹ: نبی ﷺ نے اپنا وصی (وصیت کیا گیا خلیفہ) "کुरآن" کو بنایا تھا:

[صحیح بخاری "کتاب المغازی" حدیث نمبر 4460] [4460] (سہیہ بخاری "کتاب المغازی" حدیث نمبر 4460)

⑤ **ترجمہ آیات-ع-مبارک :** بے شک میں اپنے بعد تم میں دو ایسی اچھی چیزیں چھوڑ کر جا رہا ہوں کہ اگر انہیں مजبوتی سے پکڑ لو گے تو کبھی گمراہ نہیں ہو گے: ① اللہ کی کتاب (کुरآن) اور ② اس کے رسول ﷺ کی سوننت (جو سہیہ اہدیس ہیں سے ماخوذ ہو)۔ (آل مائتہ لیل مالک "کتاب الفکر" حدیث نمبر 1628، آل مستدرک لیل الحاکم "کتاب الفکر" حدیث نمبر 318)

[الموطاء للمالک "کتاب القدر" حدیث نمبر 1628، المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 318]

⑥ "عجماء-ع-ممت" کو حجت اور دلیل ماننا درحقیقت کورآن و سہیہ اہدیس کے احکام کی پوری کرنے میں ہی شامل ہے: (سورتنس: آیات 115)، (آل مستدرک لیل الحاکم "کتاب الفکر" حدیث نمبر 399)

⑦ اگر کورآن و سوننت (سہیہ ہدیہ) اور عجماء-ع-ممت کی مخالفت نہ آئے تو جدید مسائل کے حل کے لیے "کیاس یا اجتہاد" کرنا جایز ہے: (آل مستدرک لیل الحاکم "کتاب الفکر" حدیث نمبر 399) [399] (سورتنس: آیات 115) [115] (الموطاء للمالک "کتاب القدر" حدیث نمبر 1628، المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 318) [318] (سورتنس: آیات 115) [115] (الموطاء للمالک "کتاب القدر" حدیث نمبر 1628، المستدرک للحاکم "کتاب العلم" حدیث نمبر 318) [318]

ہفتاوار کورآن کلاس ریسرچ اکیڈمی میں ہر ہفتے کو عشا کی نماز کے فوراً بعد **55 منٹ** کورآن کا ترجمہ و تفسیر کلاس ہوتی ہے۔ کلاس کے بعد

سوال و جواب کی سلسلہ نشین بھی ہوتی ہے۔ **تمام مکتبہ فیکر** سے تعلق رکھنے والے ہمارے بھائیوں کو دعوت-ع-آم ہے۔

जादू टोने, वबाई अमराज और कुदरती हाद्सात से बचाव के लिए सहीह सुन्नत वजाईफ

मुर्शिदी कामिल, इमाम उल अंबियां ﷺ की सहीह अहादीस के नम्बर्स उलेमाएं हरमैन और बैरुत के जारी शुदा इंटरनेशनल नंबरिंग के मुताबिक हैं.

- 1 आयातुल कुर्सी पढ़ने वाला शैतान और जिन्नात से महफूज हो जाता है और अल्लाह उसकी हिफाजत के लिये एक मुहाफिज मुकरर फरमा देता है.

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ..... وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ۝

1 मर्तबा सुबह और शाम [بخاری: 2311، السنن الكبرى للنسائي: 8017، المستدرک للحاکم: 2064]

- 2 मुअव्विजात की तिलावत हर शै से काफी हो जाती है, ये 3 तीन सूरेतें शैतान, जिन्नात और जादू के खिलाफ अल्लाह की पनाह में आने का जरिया है.

۝ قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ ...

तीनों 3 मर्तबा सुबह और शाम [جامع ترمذی: 3575، سنن ابی داؤد: 5082، سنن نسائی: 5429]

- 3 इन कलिमात का सवाब 4 गुलाम आजाद करने के बराबर है और अल्लाह तमाम दिन और रात में हर खतरनाक चीज और शैतान से बचाव फरमा देता है.

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

तर्जुमा: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह अकेला हैं, उसका कोई शरीक नहीं, उसी के लिए तमाम बादशाहत है और उसी के लिए ही तमाम तारीफ है, और वह हर शै पर मुकम्मल कुदरत रखता है.

10 मर्तबा सुबह और शाम [مُسلم: 6844، سنن ابی داؤد: 5077، سنن ابن ماجه: 3867]

(انشاء الله ﷻ)

- 4 ये दुआ पढ़ने वाले को न तो कोई शै नुकसान पहुँचा सकती है, और न ही कोई नागहानी आफत और मुसिबत ही उसे पहुँचेगी.

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّيِّعُ الْعَلِيمُ

तर्जुमा: अल्लाह के नाम के साथ, जिसके नाम (की बरकत) से ज़मीन व आसमान में कोई चीज नुकसान नहीं पहुँचा सकती, और वही सुनने वाला जानने वाला है.

3 मर्तबा सुबह और शाम [جامع ترمذی: 3388، سنن ابی داؤد: 5088، سنن ابن ماجه: 3869]

(انشاء الله ﷻ)

- 5 ये दुआ पढ़ने वाले को ज़हरीले जानवर (मस्लन बिच्छु, साँप, कीड़ों और मच्छर वगैरह) का डंक नुकसान नहीं पहुँचा सकेगा.

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ [مُسلم: 6880، مُسنَدِ احمد: 7885، 290/2]

3 मर्तबा सुबह और शाम तर्जुमा: मैं अल्लाह के कलिमाती कामीलह के साथ (الله ﷻ की) पनाह पकड़ता हूँ हर उसी चीज के शर से जो उसने पैदा की.

[جامع ترمذی: 593] **नोट** अल्लाह ﷻ की "हम्द" और उसके महबूब ﷺ पर "दरुद शरीफ" पढ़ना, हमारी दुआओं की कुबुलियत का बेहतरीन जरिया है